नारी और वैराग्य : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ0 पुष्पा कुमारी

विवेकानन्द, अरविन्द और गाँधी जिस ध्येय को लेकर चले उसका सामाजिक रूप यह है कि धर्म को चन्दन, कंठी, माला, पूजा, होम और मन्दिर तक ही सीमित रहना चाहिए। उसे समग्र जीवन को अपनी गोद में उठा लेना है। धर्म की स्थापना सन्यासी और जीवन की स्थापना गृहस्थ करें, यह उचित स्थिति नहीं है। **आदर्श समाज वह होगा जिसके संन्यासी भी गृहस्थ और गृहस्थ भी संन्यासी होंगे** अथवा दोनों के बीच कोई भेद नहीं रहेगा। धर्म की जीवन–व्यापी बनाने का यह उद्‌देश्य प्राचीन काल में ही झलका था जिसके परिणाम संतोष जनक हुए हैं। मध्यकालीन भारत में भी वीर–शैव–सम्प्रदाय इसी उद्‌देश्य को लेकर चला था जिसका परिणाम यह हुआ कि सन्यास का आदर्श इस सम्प्रदाय के गृहस्थों का भी आदर्श हो गया।